

---

दिनांक 21-10-1975 की अव्यक्त वाणी  
पर आधारित मुरली कविता

---

बेहद की वैराग्य-वृत्ति ही  
विश्व परिवर्तन का आधार  
व

महादानी और वरदानी ही महारथी

---

नई दुनिया को लाने का खुद को समझो आधार  
नई दुनिया कब आएगी इसका सबको इन्तजार

नई दुनिया के लिए खुद में नयापन लेकर आओ  
पुराने सर्व संस्कार बोल और चलन को मिटाओ

नवीनता और स्व परिवर्तन खुद में तुम दिखाओ  
इसी आधार पर विश्व परिवर्तन नजदीक लाओ

विश्व परिवर्तन के लिए वैराग्य वृत्ति जगाओ  
वैराग्य को सम्पूर्ण परिवर्तन का आधार बनाओ

बेहद के वैरागियों का तुम ऐसा संगठन बनाओ  
हर आत्मा के अन्दर वैराग्य के संस्कार जगाओ

बाप के लव में खुद को तुम लवलीन बनाओ  
इसी विधि से खुद में बेहद का वैराग्य जगाओ

अपनी लवलीन अवस्था से नीचे कभी ना आओ  
ऐसे लवलीन बच्चों का लवली संगठन बनाओ

मैं पन मिटाकर खुद में निमित्त भाव जगाओ  
विश्व कल्याण की भावना से महारथी कहलाओ

औरों को आगे बढ़ाने में खुद को निमित्त बनाओ  
ऐसा श्रेष्ठ स्वभाव रखकर बाप समान कहलाओ

समय गुण और शक्ति सबकी उन्नति में लगाओ  
त्याग तपस्या से खुद को तुम महादानी बनाओ

महादानी की अवस्था ही वरदानी तुम्हें बनाएगी  
हर संकल्प और बोल को प्रत्यक्ष करती जाएगी

---